

राजनीतिक चेतना की दृष्टि से हिन्दी उपन्यासों का वैशिष्ट्य : एक अध्ययन



डॉ० विजय कुमार शुक्ला
एम.ए., पीएच.डी. (हिन्दी)
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर (बिहार)

राजनीतिक उपन्यासों में मुहावरों का प्रयोग राजनीतिक के निमित परिस्थिति विशेष में किसी पात्र के सहजोदगार के रूप में या लेखक के किसी वक्तव्य में उचित वैचित्रय के रूप में प्रयुक्त हुए हैं। मुहावरों के रूपरूप, संरचना, अर्थ और प्रयोग को लेखकों ने अपने कथ्य के अनुरूप ढाल कर उनमें नई अर्थवत्ता को भरा है। एक अंग्रेज कप्तान पर राजनीतिक करता हुआ 'हुजुर' का कुत्ता अपने कथन में मुहावरे की संरचना में विचलन करता है। 'घास काटना, एक मुहावरा है। किन्तु वह इस मुहावरे को ज्यों का त्यों प्रयोग नहीं करता। वह कहता है-'‘मेजर जब रिटायर हुआ तो जो घास उसने नौकरी में काटी थी, उसे हिन्दुस्तान की धूप में सुखाने के लिए अब वह हिन्दुस्तान में आकर पुलिस में सुपरिंटेंडेंट हो गया था और इसलिए वह कप्तान कहलाता था।’’ मेजर ने अपनी नौकरी में घास काटी थी तो इस कथ्य की अभिव्यक्त न हो पाती कि नौकरी में ही नहीं जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी वह घास काटता रहा है। 'हुजुर' में ही 'बिस्तर गोल करना' मुहावरे का प्रयोग बड़ा सार्थक बन पड़ा है- ‘‘साहब ने भी दुनिया बसाई थी कि बिस्तर के पास जैसे हालडाल रखा था। जाने किस दिन गोल करना पड़ जाये।’’ बिस्तर गोल करना, इस मुहावरे के दो भाग करके, दो वाक्यों में प्रयुक्त किया है। इससे लेखक ने अपने दो मंतव्यों को बखूबी स्पष्ट किया है कि अंग्रेज यह भली भाँति जानते थे कि उन्हें कभी भी भारत छोड़ना पड़ सकता है। इसलिए वे इतना प्रबंध रखते थे कि अकस्मात देश छोड़ने पर उन्हें असुविधा न हो।

शिक्षा के क्षेत्र में व्याप्त विसंगतियों को उभारने के लिए ‘रास्ते की कुतिया’ मुहावरे का प्रयोग द्रष्टव्य है। “वर्तमान शिक्षा-पद्धति रास्ते में पड़ी हुई कुतिया है जिसे कोई भी लात मार सकता है।” शिक्षा की सार्थकता को निखारने के लिए ही ‘रास्ते की कुतिया’ का प्रयोग किया है। शिक्षा की सार्थकता कुछ नहीं है उसकी सार्थकता पर कोई भी व्यक्ति प्रश्न चिह्न लगा सकता है यदि लेखक का मंतव्य है। ‘रागदरबारी’ में लेखक ने लगातार मुहावरों के प्रयोग द्वारा भी व्यंग्य को उभारा है “खन्ना मार्खर की इस हरकत का वर्णन वे ‘मुँह में राम बगल में छुरी’, ‘हमारी ही पाली लोमड़ी हमारे ही घर में हुआ-हुआ।’, (यद्यपि लोमड़ी ‘हुआ-हुआ’ नहीं करती) ‘पीठ में छुरा भोंकना’, ‘मेढ़क को जुकाम हुआ है’ वैरी कहावतों के सहारे करते रहे। यहाँ पर इतने सारे मुहावरों के प्रयोग द्वारा खन्ना मार्खर के चरित्र पर व्यंग्य किया है।

हिमांशु श्रीवास्तव के उपन्यास ‘कथा सूर्य की नई यात्रा’ के उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द्र सङ्क पर खड़े-खड़े सोचने लगते हैं- “वस्तुतः आज का साहित्यकार अपने पैरों पर उठ खड़ा हुआ है।.... साहित्यकार अपने नाम के प्रति सजग है-नाम और प्रतिष्ठा के क्षेत्र में साहित्यकार नए कदम उठा रहे हैं।” “पैरों पर खड़ा होना” मुहावरे का अर्थ है जीविकोपार्जन में समर्थ होना। उठ खड़ा होने में जो भाव है वह व्यंग्यात्मक है। आज का साहित्यकार नाम कमाने, प्रसिद्धि प्राप्त करने के लिए तरह-तरह के हथकंडों को अपनाता है। इस बात को मुहावरे के स्वरूप विचलन के द्वारा प्रकट किया गया है।

मुहावरों की संरचना और स्वरूप परिवर्तन से अर्थ परिवर्तन का लक्ष्य तो राजनीतिक उपन्यासकारों के सम्मुख रहा ही है पर कहीं संरचना और स्वरूप के यथावत् रहने पर भी उसमें अर्थ वैपरीत्य के द्वारा व्यंग्य क्षमता को उत्पन्न किया गया है। ‘रानी नागफनी की कहानी’ के कुंअर अस्तभान चार बी०ए० में अनुत्तीर्ण हो चुके हैं और अब उन्हें आत्मगलानि हो रही है वे आत्महत्या करना चाहते हैं। वे कहते हैं-“हम वीर कुल के हैं। हम क्षत्रिय हैं हम आन पर मर मिटते हैं।” यहाँ पर आन पर मर मिटना मुहावरा संदर्भ के अनुरूप ही सामान्य

से विशिष्ट अर्थ अभिव्यक्त करता है। यह कुंअर अस्तभान की प्रशंसा की अपेक्षा उनकी कायरता और अयोग्यता पर किसी को ही उद्घटित करता है।

देश के नेताओं की स्वार्थपरता, दिखावेबाजी, आदि की प्रवृत्ति पर राजनीतिक करने के निमित्त मनहर चौहान ‘जीवन न्यौछावर करना’ मुहावरे में कुछ परिवर्तन करके अपने उद्देश्य को पूरा करने में सफल रहे हैं- “प्रधानमंत्री ने देश की जनता के लिए सुरक्षित रखा था। यों तो, उनका सारा जीवन ही देश की जनता के लिए न्यौछावर कहा जाता था।” न्यौछावर कहा जाता था, में कहा जाता से यह ध्वनि निकलती है कि प्रधानमंत्री साधारण जनता के लिए उतना समय नहीं दे पाती जितना उनके लिए अपेक्षित था। लेखक ने जीवन न्यौछावर करने का रूप बदलकर, उसे नया अर्थ प्रदान किया है “‘अभियान का प्रसंग छिड़ते ही किस मिनिस्टर की जीभ लार नहीं टपकती?’” लेखक ने जीभ से लार टपकने के स्थान पर टपकाना का प्रयोग करके एक विशिष्ट अर्थ को व्यंजित किया है। जीभ से लार टपकने लगती है, कहने से नेताओं की लालच की स्वाभाविक प्रवृत्ति उतनी उद्घटित नहीं होती जितनी जीभ द्वारा लार टपकाए जाने पर होती है। ‘सब कुछ गलत हाथों में’ मुहावरों के प्रयोग द्वारा देश की खाद्यान्न स्थिति पर राजनीतिक किया गया है “हजारों भूखे-नंगे, भगवान को पुजारी के अनुग्रह पर छोड़ राशन की कतार लगे, अपनी उम्र काट रहे हैं। राशन पानी के बजाय उन्हें लाठी गोली मिल रही है। सरकार के पास लाठी गोली का जंगी रटाक है। वह जनता को खाली हाथ कैसे लौटाये? प्रधानमंत्री का लड़का करोड़ों रूपयों की फैक्टरी डालकर कार बना रहा है और ये भाई लोग राशन पानी के लिए सरकार के प्राण खाये जा रहे हैं।

हिमांशु श्रीवास्तव ने ‘अंधा बाँटे रेवड़ी फिर-फिर अपने को दे ‘लोकोक्ति को राजनीतिक के लिए अपने ढंग से प्रयुक्त किया है। लोकोक्ति का कुछ ही अंश उनके कथ्य को स्पष्ट कर देता है। साहित्य अकादमी में पुरस्कार वितरण में होने वाली धांधली के संबंध में एक साहित्यकार कहता है... “पुरस्कार की आशा करना व्यर्थ है यहाँ तो अंधा रेवड़िया बाँटा है। दूसरो बोला-पार साल अंधे ही ने तो बांटी थी।” अंधे द्वारा रेवड़ियाँ बांटे जाने में फिर-फिर अपने को देने की बात

स्वयं ही प्रकट हो जाती है। उपन्यासकार उसे प्रकट करना ही नहीं चाहता। उसके अनेक पाठक यह बात स्वयं जान लेता है कि समय भाई-भतीजावाद का है।

श्रीलाल शुक्ल ने ‘रागदरबारी’ में शहर के शिक्षित वर्ग पर राजनीतिक करने के निमित्त निम्न लोकोक्ति का प्रयोग किया है—“सुअर का सा लेंड न लीपने के काम आये न जलाने के।” सुअर का सा लेंड न लीपने के काम आये न जलाने के से खतः ही यह उद्घोषित होता है कि शहर का शिक्षित आदमी किसी भी काम का नहीं है। वह चाहे कुछ भी करता रहे, उसका कोई उपयोग नहीं है।

श्यामसुन्दर घोष ने ‘एक उलूक कथा में’ इस लोकोक्ति-एक समझदार अच्छा सौ ना समझ के’ का स्वरूप परिवर्तन करके, इसे नया अर्थ प्रदान कर द्रष्टव्य बना दिया है—“उल्लुओं को तो कुछ सूझता नहीं, आँखें मूँदे बैठे रहते हैं और मौका आने पर किसी के कहने से या तो हाथ उठाकर या मोटा गिराकर महत् जनों का कल्याण करते हैं। इसलिए सौ ना समझ की अपेक्षा एक समझदार आज परसंद नहीं किया जाता।” यहाँ पर सौ ना समझ को अधिक महत्व प्रदान करके यह बात प्रकट की गई है कि वर्तमान युग में बुद्धिमानों की अपेक्षा उल्लुओं का अधिक महत्व है।

श्रीकांत चौधरी ने ‘सब कुछ गलत हाथों में’, जिसकी लाठी उसकी भैंस’ लोकोक्ति का प्रयोग वर्तमान शासन व्यवस्था पर राजनीतिक के निमित्त किया है—“पुरखे कह गये हैं, जिसकी लाठी उसकी भैंस। जनता को सभी भैंस समझते हैं मगर लाठी वाला ले जाता है? सत्ता से बड़ी लाठी आजकल कहीं नहीं होती।” यहाँ पर जिसकी लाठी उसकी भैंस के द्वारा व्यंजित किया है कि सारे राजनीतिक दल जनता को भैंस समझते हैं। लेकिन जिस राजनीतिक दल के पास सत्ता की लाठी होती है वह विभिन्न प्रकार के लालच देकर जनता को अपनी ओर कर लेता है। अतः प्राचीनकाल के समान आज का युग भी ताकत का युग है जिसके पास ताकत है वह सब कुछ प्राप्त कर लेता है।

राजनीतिक उपन्यासों में उपर्युक्त मुहावरों और लोकोक्तियों के अतिरिक्त अन्य मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग राजनीतिक की प्रभावमयता के निमित्त हुआ है।

‘रागदरबारी’ में ही एक अन्य स्थान पर भी इसी विधि द्वारा अश्लील साहित्य पर राजनीतिक बाण चलाया है—“एक साहित्य है जो गुप्त कहलाता है, जो भारत में ‘अंग्रेजी राज’ जैसी पुस्तकों से भी ज्यादा खतरनाक है, क्योंकि उसका छपना तो 1947 के पहले तो जुर्म था ही आज भी जुर्म है, जो बहुत सी दफतरी बातों की तरह गुप्त होकर भी गुप्त नहीं रहता, जो आहार-निद्रा-भय आदि में फंसे हुए आदमियों की जिन्दगी में बड़े सुखद लिटरेरी सप्लीमेंट का काम करता है और जो विशिष्ट साहित्य और जन-साहित्य की बनावटी श्रेणियों को लांघकर व्यापक रूप से सबके हृदयों में प्रतिष्ठित है। वैसे उनमें कोई खास बात नहीं होती, सिर्फ यही बताया जाता है कि किसी आदमी ने किसी आदमी या औरत के साथ किस तरह से क्या बर्ताव किया, यानी उसमें, सुमित्रानंदन पंत की दार्शनिक भाषा में कहा जाये तो मानव, मानव के चिरन्तन’ सम्बन्धों का वर्णन होता है।”

पैरोडी के द्वारा भी राजनीतिक को समृद्ध किया गया है। इसमें लेखक किसी प्रसिद्ध साहित्यिक कविता या दोहे आदि को लेकर, उसके रूप को विकृत करके राजनीतिक को उभारता है। पैरोडी में गुदगुदाहट के साथ तीक्ष्ण राजनीतिक का भी मिश्रण होता है। नरेन्द्र कोहली ने पैरोडी के द्वारा पुलिस की कार्याविधि के साथ-साथ पुलिस के आतंक पर राजनीतिक किया है—

“कल मरना सो आज मर, आज करना सो अब
पलभर में पुलिस आयेगी, बहुरि मरेगा कब ?”
कब्र-कब्र में अबुध बालकों की हड्डी रोती है।
दूध-दूध की कदम-कदम सारी रात सदा होती है।”

पर कवि ने आगे लिखा ‘‘दूध-दूध’ दुनिया सोती है। यह बात गलत है। दूध दुनिया को सोने नहीं देता। सुबह बच्चे बिना दूध के रह जायेंगे और उसे चाय भी नहीं मिलेगी।’’ यहाँ पर लेखक ने महानगरों में दूध की कमी के साथ दूध को प्राप्त करने में होनेवाली कठिनाइयों पर राजनीतिक किया है।

पैरोडी राजनीतिक का एक प्रभावकारी सफल उपकरण है। पैरोडी वास्तव में उस वस्तु को नष्ट कर देती है जिसकी नकल करते वह बनती है। इसमें हास्य गौण होता है तथा आलोचना एवं घृणा के तत्व अधिक होते हैं।

संदर्भ सूची :

1. हीरक जयंती-नागार्जुन, पृ०-१०
2. उपरिवत्, पृ. १३.
3. रागदरबारी-श्रीलाल शुक्ल, पृ. १५.
4. कथा सूर्य की नयी यात्रा-हिमांशु श्रीवास्तव, पृ. ११८.
5. आखिरी सफा-मनहर चौहान, पृ. ४१.
6. आखिरी सफा-मनहर चौहान, पृ. ४१.
7. कथा सूर्य की नई यात्रा-हिमांशु श्रीवास्तव, पृ. ४२.
8. आश्रितों का विद्रोह-नरेन्द्र कोहली, पृ. १०४.
9. रानी नागफनी की कहानी-हरिशंकर परसाई, पृ. ४३.
10. आश्रितों का विद्रोह-नरेन्द्र कोहली, पृ. १०९.